चिंतन (Thinking) - विशेषताएं व विशिष्ट नियम

CTET Exam Notes : Child Development and Pedagogy (CDP)

in Hindi Medium

Topic : Language & Thought

चिंतन - विशेषताएं व विशिष्ट नियम:-

चिंतन अवधारणाओं, संकल्पनाओं, निर्णयों तथा सिद्धांतो आदि में वस्तुगत जगत को परावर्तित करने वाली संक्रिया है जो विभिन्न समस्याओं के समाधान से जुड़ी हुई है। चिंतन विशेष रूप से संगठित भूतद्रव्य-मस्तिष्क- की उच्चतम उपज है। चिंतन का संबंध केवल जैविक विकासक्रम से ही नहीं अपितु सामाजिक विकास से भी है।

चिंतन का उद्भव लोगों के उत्पादन कार्यकलाप की प्रक्रिया के दौरान होता है और वह यथार्थका व्यवहृत परावर्तन सुनिश्चित करता है। अपने विशिष्ट मूल, क्रियाकलाप के ढंग और परिणामों की दृष्टि से उसका स्वरूप सामाजिक होता है। इसकी पुष्टि इस बात में है कि चिंतन श्रम तथा वाणी के कार्यकलाप से, जो केवल मानव समाज की अभिलाक्षणकताएं हैं, अविच्छेद्य रूप में जुड़ा हुआ है। इसी कारण मनुष्य का चिंतन वाणी के साथ घनिष्ठ रखते हुए मूर्त रूप ग्रहण करता है और उसका परिणाम भाषा के रूप में व्यक्त होता है।

चिंतन की सामान्य विशेषताएं (General Characteristics of Thinking)

- मनुष्य जीवनभर गंभीर और कोरी कार्यभार तथा समस्याएं हल करता रहता है। ऐसी समस्याओं और अप्रत्याशित कठिनाइयों की उत्पत्ति इसका ज्वलंत प्रमाण है कि परिवेशी विश्व में असंख्य अज्ञात, अपरिचित और प्रच्छन्न (disguised) वस्तुएं तथा परिघटनाएं (phenomenon) हैं तथा वे उसके जीवन को प्रभावित करती रहती हैं। वे मनुष्य को सोचने को विवश करती हैं और उसे प्रकृति के रहस्यों में अधिकाधिक गहरे पैठने, नयी-नयी प्रक्रियाएं, गुणधर्म और लोगों व वस्तुओं के संबंध खोजने की चुनौती देते हैं।

- चिंतन (thinking) मनुष्य के जीवन के दौरान निरंतर सामने आनेवाली वस्तुओं के नये, अज्ञात गुणधर्मों को समझने की आवश्यकता के कारण उत्पन्न होता है। मनुष्य का पुराना ज्ञान-भंडार अपर्याप्त सिद्ध होता है। ब्रह्मांड अनंत-असीम है और इसके संज्ञान की प्रक्रिया का भी कोई अंत नहीं है। चिंतन सदा नये, अज्ञात की ओर लक्षित होता है। सोचते हुए हर मनुष्य नयी खोजें करता है, चाहे वे अत्यंत छोटी और केवल उसके अपने लिए ही क्यों ना हों।

- चिंतन वाक् (speech) से अविभाज्यतः जुड़ा हुआ है और तात्विकतः नये की तलाश व खोज की एक समाजसापेक्ष मानसिक प्रक्रिया है। चिंतन व्यावहारिक सक्रियता के आधार पर ऐंद्रिय ज्ञान से पैदा होता है और इसकी सीमाओं से कहीं दूर तक व्याप्ति रखता है। यह विश्लेषण (analysis) और संश्लेषण (synthesis) की मदद से वास्तविकता (reality) का व्यवहित तथा सामान्यीकृत परावर्तन करने में सक्षम होता है।

www.tetsuccesskey.com

अवश्ये पढ़े: [चिंतन के भेद- Types of Thinking]

चिंतन के मुख्य विशिष्ट नियम

संक्रियात्मक दृष्टि से चिंतन तार्किक संक्रियाओं (logical operations) की एक पद्धति है, जिनमें से प्रत्येक संक्रिया, संज्ञान (cognition) की प्रक्रिया में एक निश्चित भूमिका अदा करती है और अत्यंत जटिल ढ़ंग से अन्य संक्रियाओं - विश्लेषण (analysis), संश्लेषण (synthesis) तथा सामान्यीकरण (generalization) - आदि से जुड़ी होती है।

विश्लेषण (analysis)

विश्लेषण (analysis)

www.tetsuccesskey.com

विश्लेषण वस्तु का उसके विभिन्न घटकों में विभाजन और उसके विभिन्न पहलुओं, तत्वों, गुणधर्मों, संबंधों, आदि का समष्टि (collectivity, totality) से अपाकर्षण (abstraction, अमूर्तकरण) करने को कहते हैं। उदाहरण के लिए, किसी मशीन या यंत्र के काम करने के सिद्धांत को जानने के लिए हम पहले उसके विभिन्न घटकों, पुर्जों की पहचान करते हैं और फिर उसे अलग-अलग हिस्सों में बांटकर देखते हैं। संज्ञान की हर प्रक्रिया में हर वस्तु के साथ भी हम मुख्य रूप से ऐसे ही करते हैं।

विश्लेषण के दौरान वस्तु के गुणधर्म, जो उसके सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण, आवश्यक और दिलचस्प गुणधर्म है, अत्यंत प्रबल क्षोभक सिद्ध होते हैं और इसलिए वे प्रमुख बन बैठते हैं। ये क्षोभक उत्तेजन (stimulation, excitation) की सक्रिय प्रक्रिया आरंभ करते हैं (विशेषतः प्रांतस्था में) और प्रेरण के शरीरक्रियात्मक नियम के अनुसार उस वस्तु के अन्य गुणधर्मों के, जो दुर्बल क्षोभक हैं, विभेदन (discrimination) को अवरुद्ध कर डालते हैं। अतः मस्तिष्क के उच्चतर भागों में उत्तेजन और अवरोधन के बीच एक निश्चित संबंध विश्लेषण की मानसिक प्रक्रिया की नींव है।

संश्लेषण (synthesis)

संश्लेषण, विश्लेषण द्वारा अलग-अलग किये गये भागों से समष्टि के, पूर्ण के निर्माण को कहते हैं। संश्लेषण की प्रक्रिया में वस्तु के अलग किये हुए तत्वों का समेकन (consolidation) और सहसंबंधन (correlation) किया जाता है। उदाहरण के लिए, मशीन या यंत्र के विभिन्न पुर्जों को आपस में मिलान करके उनके बीच मौजूद संबंध और उनकी अन्योन्यक्रिया का ढ़ंग मालूम किये जा सकते हैं। संश्लेषण का शरीरक्रियात्मक आधार प्रांतस्था के कालगत तंत्रिका-संबंधों का आपस में जुड़ना है।

विश्लेषण और संश्लेषण सदा अन्योन्याश्रयी (interdependent) होते हैं। उनकी एकता अपने को सहसंबंधन की संज्ञानात्मक प्रक्रिया में ही प्रकट कर देती है। बाह्य विश्व के संज्ञान की आरंभिक अवस्था में मनुष्य मुख्यतया तुलना (comparison) के ज़रिए विभिन्न वस्तुओं का ज्ञान प्राप्त करता है। दो या कई वस्तुओं की हर तुलना उन्हें एक दूसरी से संबद्ध (relate) करने, यानि संश्लेषण से आरंभ होती है। इस संक्रिया के दौरान मनुष्य संबद्ध परिघटनाओं, वस्तुओं, घटनाओं, आदि का विश्लेषण करता है, अर्थात वह पता चलाता है कि उनके बीच क्या समान है और क्या असमान। उदाहरण के लिए, बच्चा विभिन्न स्तनपायी जीवों की तुलना करता है और शिक्षक की मदद से शनैः शनैः उनकी समान विशेषताओं को पहचानना सीखता है। इस तरह तुलना सामान्यीकरण की ओर ले जाती है।

सामान्यीकरण (generalization)

www.tetsuccesskey.com

सामान्यीकरण (generalization)

सामान्यीकरण विभिन्न वस्तुओं की तुलना और विश्लेषण का परिणाम है। सामान्यीकरण से तुलनागत वस्तुओं की साझी विशेषताओं का अपाकर्षण किया जाता है। ये विशेषताएं दो प्रकार की हो सकती हैं : साम्यमूलक (similarity based) और बुनियादी (basic)। उदाहरण के लिए, हम ऐसी कोई चीज़ पा सकते हैं, जो बहुत विविध वस्तुओं में देखी जाती है। जैसे कि, साझे रंग को कसौटी बना कर हम चेरी के फूल, रक्त, कच्चे मांस, आदि को एक समूह या श्रेणी में शामिल कर सकते हैं। फिर भी यह समानता (साझी विशेषता) उपरोक्त वस्तुओं के वास्तव में बुनियादी गुणधर्मों को प्रतिबिंबित नहीं करती। इस संदर्भ में उनकी समानता बहुत ही सतही और गौण विशेषता पर आधारित है। ऐसे उथले, सतही विश्लेषण के आधार पर किये गए सामान्यीकरण बहुत कम मूल्य रखते हैं और निरंतर ग़लतियों का कारण बनते हैं। उदाहरण के लिए, ह्वेल की बाह्य विशेषताओं के सतही विश्लेषण पर आधारित सामान्यीकरण से हमें भ्रम हो सकता है कि ह्वेल स्तनपायी जीव नहीं, बल्कि मछली है। इन जीवों की ऊपर बताये ढ़ंग से तुलना करके हम साम्यमूलक लक्षणों (बाह्य आकृति, मछली जैसा शरीर) के आधार पर वर्गीकरण करते हैं, न कि बुनियादी लक्षणों के आधार पर। इसके विपरीत यदि हम विश्लेषण के ज़रिए उन विशेषताओं का पता लगाएं, जो बुनियादी हैं, तो हम निश्चय ही ह्वेल को स्तनपायी जीवों में शामिल करेंगे।

इस तरह सभी समजातीय वस्तुओं में साझी बुनियादी विशेषता होती है, किंतु हर साझी साम्यमूलक विशेषता का बुनियादी विशेषता भी होना अनिवार्य नहीं है। साझी बुनियादी विशेषताओं के गहन विश्लेषण तथा संश्लेषण के दौरान और उनके परिणामस्वरूप ही पहचाना जा सकता है।

विश्लेषण, संश्लेषण और सामान्यीकरण के नियम चिंतन के मुख्य विशिष्ट नियम हैं और केवल उनके आधार पर ही उसकी सभी बाह्य अभिव्यक्तियों की व्याख्या की जा सकती है।

नोट: आपको हमारी पोस्ट कैसी लगी, कृपया कमेंट करके ज़रूर बताए ।

Saba Pasha

Saba Pasha is the founder and CEO of TET Success Key. She created one of the best site for exam preparation.Here you can find latest exam updates and free study material for your exam preparation.